अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) आयुकर्म आश्री में कृष्ण पक्षी में कौनसे भांगे नहीं पाए जाते हैं-
(क) 1 से 3 (ख) 2 एवं 3
(ग) 2 एवं 4 (घ) 3 एवं 4 (ग)

(ii) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 40 बोलों में मिश्रदृष्टि में भांगे पाए जाते हैं-
(क) 3 एवं 4 (ख) 1 एवं 2
(ग) 1 एवं 3 (घ) 1 एवं 4 (क)

(iii) मनःपर्यवज्ञान में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 4 से 12 (ख) 6 से 12
(ग) 4 एवं 6 से 12 (घ) 9 से 12 (ख)

(iv) कौनसे उद्देशकों में समुच्चय जीव का बोल नहीं पाया जाता है-
(क) 1 से 9 (ख) 2 से 9
(ग) 2 से 7 (घ) 3 से 10 (ख)

(v) जीव पज्जवा के थोकड़े में विकलेन्द्रिय के अलावे हैं-
(क) 93 (ख) 375
(ग) 98 (घ) 246 (घ)

(vi) जीव पर्याय होती हैं-
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्त (घ) संख्यातहीन (ग)

(vii) उत्कृष्ट अवगाहना वाला नैरयिक उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरियक से स्थिति की अपेक्षा है-
(क) तुल्य (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुःस्थानपतित (ख)

(viii) मध्यम स्थिति वाले द्वीन्द्रिय, मध्यम स्थिति वाले द्वीन्द्रिय से स्थिति की अपेक्षा है-
(क) तुल्य (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुःस्थानपतित (ग)

(ix) संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिज सन्नी तिर्यंच की अवगाहना होती है-
(क) 6 गाउ (ख) 100 योजन
(ग) 1000 योजन (घ) 500 धनुष (ग)

(x) रूपी अजीव की पर्याय के भेद होते हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 2 (घ) 3 (क)

(xi) आठ स्पर्शों में परमाणु के स्पर्श होते हैं-
(क) 2 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 8 (ख)

(xii) जघन्य स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जघन्य, स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से प्रदेश की अपेक्षा पतित है-
(क) एकस्थान (ख) द्विस्थान
(ग) चतुःस्थान (घ) षट्स्थान (घ)

(xiii) जागृत की राशि होती है-
(क) 248 (ख) 255
(ग) 252 (घ) 254 (ग)

(xiv) अनाकार (दर्शन) उपयोग वालों की राशि होती है-
(क) 62 (ख) 64
(ग) 32 (घ) 34 (ख)

(xv) संज्ञी में कितने गुणस्थान पाए जाते हैं-
(क) 1-14 (ख) 1-12
(ग) 1-9 (घ) 1-13 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) 47 बोल की बंधी का श्री भगवती सूत्र के 26 वें शतक में अधिकार चलता है। (हाँ)
(ii) 47 बोल की गणना में 6 ज्ञान शामिल है। (हाँ)
(iii) मोहनीय कर्म का बंध 1 से 10 गुणस्थान तक निरन्तर चलता है। (नहीं)
(iv) वेदनीय कर्म आश्री में अलेशी, अयोगी में केवल एक चौथा भांगा पाया जाता है। (हाँ)
(v) एक पल्योपम संख्यात हजार वर्षों का होता है। (नहीं)
(vi) मनुष्य भव में जो अवधि ज्ञान लेकर उत्पन्न होते हैं, वह अवधिज्ञान जघन्य होता है। (नहीं)
(vii) चारित्रवान मनुष्य असंख्यात वर्ष की आयु वाले होते हैं। (नहीं)
(viii) केवलज्ञानी मनुष्य, केवलज्ञानी मनुष्य से बीस वर्णादि पर्यायों की अपेक्षा चतुस्थानपतित होता है। (नहीं)
(ix) परमाणु एक आकाश प्रदेश पर ही ठहरता है। (हाँ)
(x) अंगुल के असंख्यातवें भाग में भी असंख्यात आकाश प्रदेश होते हैं। (हाँ)
(xi) लोक असंख्यात प्रदेशी ही होता है, अनन्त प्रदेशी नहीं। (हाँ)
(xii) परमाणु एवं सभी प्रकार के पुद्गल स्कन्धों की जघन्य स्थिति एक समय की तथा उत्कृष्ट स्थिति संख्यात काल की होती है। (नहीं)
(xiii) समुद्घात करने वाले जीव, समुद्घात नहीं करने वालों से थोड़े होते हैं। (हाँ)
(xiv) असंयत में 7 कर्मों के बंध की नियमा और आयु की भजना है। (हाँ)
(xv) जिन बोलों में मात्र चौदहवाँ गुणस्थान तथा सिद्ध भगवान मिलते हैं, उनमें सात कर्मों का अबंध कहना चाहिए। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	पद्म लेश्या में गुणस्थान	(क) 1 से 10	1 से 7
(ii)	नो संज्ञा बहुता में गुणस्थान	(ख) 2, 4 से 14	7 से 14
(iii)	लोभ कषायी में गुणस्थान	(ग) 1 से 7	1 से 10
(iv)	सम्यक्दृष्टि में गुणस्थान	(घ) 7 से 14	2, 4 से 14
(v)	चतुरिन्द्रिय के अलावे	(च) 93	84
(vi)	भवनपति देवों के अलावे	(छ) 81	930
(vii)	त्रीन्द्रिय के अलावे	(ज) 84	81
(viii)	व्यन्तर के अलावे	(झ) 930	93
(ix)	परमाणु में स्पर्श	(य) एक आकाश प्रदेश	4
(x)	अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में परमाणु	(र) 2	अनन्त
(xi)	परमाणु की अवगाहना	(ल) अनन्त	1
(xii)	एक परमाणु में एक समय में स्पर्श	(व) 4	2
(xiii)	नोइन्द्रिय उपयोग वाले	(क्ष) 8 की भजना	विशेषाधिक
(xiv)	अपर्याप्त	(त्र) विशेषाधिक	7 कर्मों की नियमा, आयु की भजना
(xv)	अभाषक	(ज्ञ) 7 कर्मों की नियमा आयु की भजना	8 की भजना

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i)	मुझे छोड़कर शेष 7 कर्मों का बंध निरन्तर होता रहता है।	आयुकर्म
(ii)	मैं वह दृष्टि हूँ, जो अपर्याप्त अवस्था में नहीं होती।	मिश्रदृष्टि
(iii)	मैं ऐसा भंग हूँ, जो चरम शरीरी मनुष्यों में ही घटित होता हूँ।	चौथा
(iv)	सामान्य मनुष्य-तिर्यंच में जघन्य स्थिति में मेरा उपयोग नहीं माना जाता।	ज्ञान
(v)	मैं संख्यात वर्ष की आयु वाला हूँ, मुझमें जघन्य अवगाहना में दो अथवा तीन ज्ञान हो सकते हैं, किन्तु अज्ञान दो ही होते हैं।	सन्नी मनुष्य
(vi)	मुझमें उत्कृष्ट मतिज्ञान एवं उत्कृष्ट श्रुत ज्ञान होता है।	चारित्रवान मनुष्य
(vii)	मुझे 9 वर्ष की आयु के बाद ही ग्रहण किया जा सकता है।	चारित्र/संयम/दीक्षा
(viii)	चौथे समय में मेरे आत्म-प्रदेश सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं।	केवली
(ix)	मैं रूपी अजीव का एक भेद हूँ जो सदा अकेला ही रहता हूँ।	परमाणु
(x)	मैं वह अस्तिकाय हूँ, जिसमें प्रदेश स्कन्ध से अलग भी हो जाते हैं।	पुद्गलास्तिकाय
(xi)	मुझमें वर्ण गंध रस स्पर्श नहीं होते।	अरूपी
(xii)	मैं दो परमाणुओं से मिलकर बना हूँ।	द्विप्रेदेशी
(xiii)	मेरी 224 राशि होती है।	नो इन्द्रिय उपयोग
(xiv)	मेरा बंध अनाहारक अवस्था में नहीं होता।	आयु
(xv)	मुझमें 10 वें गुणस्थान को छोड़कर शेष सभी गुणस्थान पाए जाते हैं।	अनाकार उपयोग/दर्शन

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) पाप कर्म (मोहनीय कर्म) में कौनसे बोलों में केवल तीसरा-चौथा भंग तथा कौनसे बोलों में केवल चौथा भंग ही पाया जाता है ?
अकषायी में तीसरा चौथा भांगा ही पाया जाता है-अलेशी, अयोगी, केवलज्ञानी में सिर्फ एक चौथा भांगा ही पाया जाता है।

(ii) वेदनीय कर्म आश्री में कौनसे 12 बोलों में पहला, दूसरा व चौथा भंग पाया जाता है?
समुच्चय जीव व मनुष्य की- समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ललेशी, शुक्लपक्षी, सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, केवलज्ञानी, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, साकार, अनाकार उपयोग

(iii) द्विस्थानपतित से क्या आशय है ?
असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक है।

(iv) असंख्यात गुण हीन-अधिक ठाण किसे कहते हैं ?
जब दो समान जीवों की आपस में तुलना करें और उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में असंख्यात गुणा अन्तर होता है तो उसे असख्यात गुण हीन-अधिक ठाण कहते हैं।

(v) जघन्य अवगाहना को समझाइए।
जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के प्रथम समय में मानी जाती है। अर्थात् उत्पत्ति के प्रथम समय में जीव की जो अवगाहना होती है, उसे जघन्य अवगाहना कहते हैं।

(vi) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य, अवगाहना, स्थिति तथा वर्णादि के आधार पर तुलना कीजिए।
द्रव्य-तुल्य, प्रदेश-षट्स्थानपतित, अवगाहना-चतुःस्थानपतित, स्थिति-चतुःस्थानपतित, वर्णादि 20

बोलों की पर्याय-षट्स्थानपतित

(vii) संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल, की संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना, स्थिति तथा वर्णादि के आधार पर तुलना कीजिए।

द्रव्य-तुल्य, प्रदेश-षट्स्थानपतित, अवगाहना-चतुःस्थानपतित, स्थिति-द्विस्थानपतित, वर्णादि 20 बोलों की पर्याय-षट्स्थानपतित।

(viii) साता वेदनीय उदय वालों से असाता वेदनीय के उदय वाले संख्यात गुणा हैं। समझाइए।

क्योकि सूक्ष्म और बादर साधारण कायिक जीवों में जन्म-मरण की अव्यक्त वेदना के साथ अनन्त जीवों के साथ एक ही शरीर में रहने से असाता ही अधिक होती है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) 47 बोल की बंधी का थोकड़ा कौनसे चार भंगों पर आधारित है ?

1. कितने जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और बाधेगा।
2. कितने जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और नहीं बांधेगा।
3. कितने जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और बांधेगा।
4. कितने जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और नहीं बांधेगा।

(ii) 47 बोल के बन्धी के वर्णन में द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ उद्देशक का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

द्वितीय उद्देशक अनन्तर उववन्ना- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव।

तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए बहुत समय हो गया अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों के अलावा सभी जीवों का समावेश इस उद्देशक में हो जाता है।

चतुर्थ उद्देशक अनन्तर अवगाढ़- पहले समय की अवगाहना वाले जीव अर्थात् उत्पत्ति के प्रथम समय में जो अवगाहना होती है, उन जीवों का समावेश इस उद्देशक में होता है।

(iii) जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की, जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना, स्थिति, वर्णादि की पर्यायों तथा उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा तुलना कीजिए।

द्रव्य-तुल्य, प्रदेश-तुल्य, अवगाहना-चतुःस्थानपतित, स्थिति-चतुःस्थानपतित, बीस वर्णादि की पर्याय तथा पाँच उपयोग की पर्याय-षट्स्थानपतित, चक्षुदर्शन की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है।

(iv) यह कैसे स्पष्ट होता है कि मनुष्य भव में उत्पन्न होते समय अवधिज्ञान मध्यम ही होता है ?

मध्यम अवधिज्ञान वाले मनुष्यों की आपस में तुलना करने पर अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहा गया है। वह तभी हो सकता है जबकि उत्पन्न होते समय मध्यम अवधिज्ञान माना जाय।

(v) मध्यम स्थिति वाले पुद्गल की, मध्यम स्थिति वाले पुद्गल से तुलना करने पर स्थिति चतुस्थान पतित क्यों मानी जाती है ?

क्योंकि दो समय से लेकर असंख्यात काल तक की मध्यम स्थिति में असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है।

(vi) भाव के 636 अलावों को समझाइए।

द्रव्य के 13 अलावे x 16 वर्णादि (कर्कश, मृदु, गुरु व लघु को छोड़कर) = 208 अलावे होते हैं तथा अठफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध को कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, इन चार स्पर्शों की अपेक्षा गुणा करने पर 1 x 4 = 4 अलावे, इन 212 अलावों को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट वर्णादि की अपेक्षा गुणा करने पर 212 x 3 = 636 अलावे भाव की अपेक्षा।

(vii) चौदह बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व लिखिए।

1. सबसे थोड़े आयु के बंधक, 2. अपर्याप्त संख्यात गुणा, 3. सुप्त संख्यात गुणा, 4. समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा, 5. सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा, 6. इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा, 7. अनाकार उपयोग वाले संख्यात गुणा, 8. साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा, 9. नोइन्द्रिय उपयोग वाले विशेषाधिक, 10. असाता वेदनीय वेदने वाले विशेषाधिक, 11. समुद्घात न करने वाले विशेषाधिक, 12. जागृत विशेषाधिक, 13. पर्याप्त विशेषाधिक, 14. आयुकर्म के अबंधक विशेषाधिक।

(viii) ज्ञानद्वार के बोलों में गुणस्थान तथा कर्मों के बन्ध की नियमा और भजना को समझाइए।

द्वार	गुणस्थान	नियमा और भजना
1. प्रथम चार ज्ञान	दूसरा, 4-12 गुणस्थान	7 की भजना, वेदनीय की नियमा
2. केवल ज्ञान	13-14 गुणस्थान एवं सिद्ध	वेदनीय की भजना, 7 का अबंध
3. तीन अज्ञान	पहला, तीसरा गुणस्थान	7 की नियमा, आयु की भजना